B. A. History Hon's, Part-II
Paper: IV (History of Asia)
Unit: I(a), Date: 13.10.2020 Lecture No.: 17

Lesson: प्रथम अफीम युद्ध (चीन के दरवाजे को खोला जाना)

यूरोप में वाणिज्यवाद के विकास का असर एशिया और अफ्रीका महादेश के पिछड़े देशों पर विनाशकारी हुआ। 15वीं सदी में यूरोप के व्यापारियों का आगमन उनके देश की सेना और ईसाई धर्म प्रचारकों ने किया और 17वीं-18वीं सदियों के दौरान एशियाई देशों में उन्होंने एशियाई देशों में अपनी-अपनी बस्तियाँ कायम कर साम्राज्यवाद और ईसाई धर्म का जाल फैलाना शुरु किया, जिसके फलस्वरूप भारत और चीन जैसे विशाल देशों में युद्धों का होना सहज स्वाभाविक था। प्रथम अफीम युद्ध ब्रिटेन और चीन के बीच चलनेवाला लम्बा युद्ध था जिसने न केवल चीन के व्यापार के लिए बन्द दरवाजे को खोल दिया, बल्कि अतिरिक्त क्षेत्राधिकार प्राप्त कर चीन की सम्प्रभुता को परिसीमित भी कर दिया। यह युद्ध 1839 से 1842 के बीच चीन और ब्रिटेन के बीच हुआ था, लेकिन इसका लाभ ब्रिटेन के अलावे अन्य यूरोपीय देशों और अमेरिका को भी मिला।

भारत की तरह चीन में भी सबसे पहले पुर्तगालियों ने व्यापार के उद्देश्य से प्रवेश किया। उन्होंने चीनी बन्दरगाह कैण्टन के पास एक द्वीप को केन्द्र बनाकर चीन में व्यापार वाणिज्य की शुरुआत की। फिर उन्होंने एक चीन के मकाओ में बस्तियाँ कायम व्यापारिक गतिविधियों को आगे बढ़ाया। 1557 में स्पेन फिलिपीन पर आधिपत्य स्थापित कर चीन से व्यापारिक आरम्भ किए। अब यूरोपीय देशों के चीन के साथ व्यापार के लिए आने का सिलसिला चल पड़ा। 1617 में डच और ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रवेश हुआ। 1698 में फ्रान्स, 1731 में डेनमार्क, 1732 में स्वीडन और 1784 में अमेरिका ने चीन के साथ व्यापारिक सम्बन्ध कायम किए। विदेशी व्यापारियों के आगमन के कारण चीन के सामने आर्थिक और राजनीतिक खतरा बढ़ गया। अतः 17वीं सदी के मध्य से ही चीन की मंचू राजवंश की सरकार ने यूरोपीय एवं अमेरिकी व्यापार को नियंत्रित करने का प्रयास प्रारम्भ किन्तु अनेक उतार चढ़ाव के साथ व्यापार का विस्तार होता रहा। कैण्टन का विशाल बन्दरगाही नगर अन्तर्राष्ट्रीय बस्तियों में तब्दील हो गया। 18वीं सदी में जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी का साम्राज्य विस्तार होने लगा तो उसने भारत में अपने द्वारा अधिकृत क्षेत्रों में अफीम की खेती को प्रोत्साहित किया और चीनी लोगों में अफीम के सेवन की लत लगानी शुरु की। चीन में बड़ी तेजी से अफीम सेवन की लत फैली और इसके साथ ही चीन में अफीम के व्यापार का घनत्व भी बढ़ता चला गया जो अंग्रेजों ही नहीं अन्य यूरोपीय व्यापारियों के लिए भी काफी सर्वाधिक मुनाफा देने वाला व्यापार बन गया। इसकी दोहरी मार चीन पर पड़ रही थी - प्रथमतः तो सारे चीन के ही अफीमची, नशेड़ी बन जाने का खतरा बढ़ गया और दूसरा यह कि अफीम के बढ़ते आयात के साथ चीन से अफीम की कीमत के तौर सोना चाँदी के निर्यात की मात्रा भी बढ़ती चली गई।

विवश होकर चीन की सरकार ने अफीम के व्यापार को समाप्त करने के लिए कठोर कदम उठाये। 1839 में चीन की सरकार ने कैण्टन में एक विशेष पदाधिकारी नियुक्त कर उसे अफीम व्यापार को समाप्त करने का निर्देश दिया। सरकारी पदाधिकारी ने कैण्टन में विद्यमान अफीम की सारी पेटियों को जब्त कर लिया और यूरोपीय व्यापारियों से इस बात की गारंटी माँगी कि वे भविष्य में चीन में अफीम नहीं लायेंगे, किन्तु इसके लिए यूरोपीय व्यापारी तैयार नहीं हुए। फलतः अफीम व्यापार के सवाल को लेकर ब्रिटेन के साथ चीन का युद्ध शुरु हो गया, जो 1842 तक चलता रहा।

इस युद्ध में ब्रिटेन का पलड़ा शुरू से ही भारी रहा। उसने अपनी नाविक शक्ति का उपयोग करते हुए अनेक तटवर्ती नगरों पर कब्जा करते हुए सिकियांग प्रदेश को जीत लिया और चीन के अंदरूनी हिस्से में नानकिंग पर हमले की तैयारी करने लगा। इस परिस्थिति में चीन ने ब्रिटेन के साथ समझौता कर लेना ही बेहतर समझा। चार वर्षों से हो रही लगातार पराजय से चीन का मनोबल टूट रहा था। परिणामतः 29 अगस्त 1842 को चीन और ब्रिटेन के बीच नानकिंग में संधि हो गई, जिसमें चीन को भारी कीमत चुकानी पड़ गई।

नानकिंग की संधि के द्वारा ब्रिटेन को हांगकांग के द्वीप पर कब्जा मिला और कैण्टन के अलावे अमाय, फूचो, निंगपो तथा शंघाई में बस्तियाँ कायम करने का अधिकार मिला। आयात-निर्यात व्यापार की दरें निर्धारित कर दी गई जो चीन के लिए नुकसानदेह साबित हुआ। ब्रिटिश व्यापारियों को अब चीन में खुले व्यापार की आजादी मिली और युद्ध हर्जाने के तौर ब्रिटेन को चीन से दस करोड़ रुपया मिला। इस प्रकार नानकिंग की संधि ने चीन के दरवाजे को खोल दिया। ब्रिटेन का अनुसरण अन्य देशों ने किया। अमेरिका ने न केवल आयात-निर्यात शुल्क की रियायत और चीन में अपनी बस्तियाँ बसाने का अधिकार प्राप्त किया, बल्कि अपनी बस्ती में अमेरिकी कानून एवं न्यायपालिका सम्बन्धी अधिकार भी प्राप्त किए, जिसे अतिरिक्त क्षेत्राधिकार कहा जाता है। यह प्रत्यक्ष तौर पर चीन की प्रभुसत्ता का हनन था। अमेरिका का देखा-देखी ब्रिटेन और फ्रांस सहित अन्य देशों ने भी अपने नागरिकों के लिए अतिरिक्त क्षेत्राधिकार प्राप्त कर लिए।

इस प्रकार प्रथम अफीम युद्ध ने चीन का दरवाजा खोलकर यूरोपीय देशों एवं अमेरिका का चीन में अपने औपनिवेशिक आर्थिक प्रभाव विस्तार का प्रथम प्रशस्त कर दिया। हलांकि चीन ने प्रतिरोध की कोशिश की और दूसरा अफीम युद्ध भी हुआ, परन्तु यूरोपीय एवं अमेरिकी आक्रमण को रोकने में चीन सक्षम नहीं हो पाया। 19वीं सदी के उत्तरार्ध में यूरोपीय देशों और अमेरिका ने अपने-अपने प्रभाव क्षेत्रों का विस्तार करते हुए पूरे चीन को तरबूजे की तरह काट डाला।

डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर